"महिला विश्वविद्यालयों एवं सह–शैक्षिक विश्वविद्यालयों में महिलाओं के आत्मविश्वास एवं सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन"

''बेटी बचाओं. बेटी पढाओं''

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध की रूपरेखा

निर्देशिका
प्रो॰ मंजू शर्मा
शिक्षा विभागाध्यक्ष

शोधकर्त्री
हेमलता कुमावत
JVR-1/18/10022

शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग
अनुसंधान और कार्यप्रणाली संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर (राजस्थान) भारत
2018

"महिला विश्वविद्यालयों एवं सह–शैक्षिक विश्वविद्यालयों में महिलाओं के आत्मविश्वास एवं सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन।"

(1) प्रस्तावना :–

शिक्षा का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान हैं। शिक्षा ही वह साधन है जिसके द्वारा समाज, देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता हैं। सभी स्त्री व पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। समाज को निरन्तर प्रगति पथ पर आगे बढ़ाने के लिए महिला शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है। शिक्षा से महिलाओं में आत्मविश्वास जाग्रत होता हैं। स्वयं पर विश्वास करना ही आत्मविश्वास है आत्मविश्वास के बल पर लोग वे कार्य कर सकते है जिन्हें करने पर वह डरते हैं। आत्मविश्वास एक सोच है जो व्यक्ति को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती हैं। आत्मविश्वास के द्वारा ही व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है। आत्मविश्वास के अभाव में हमारे सभी गुण योग्यताएँ अर्थहीन हैं। सफलता का रहस्य आत्मविश्वास हैं। अपनी शक्तियों, गुणों व योग्यताओ पर भरोसा करना ही आत्मविश्वास हैं। आत्मविश्वास मनुष्य में सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करता है तथा वह उसे आशावादी बनाता हैं।

आत्मविश्वास के बल पर ही कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स ब्रह्माण्ड तक पहुँच सकी व दोनों पैर ट्रेन से कर जाने के बाद भी अरूणिमा सिन्हा ने एवरेस्ट फतह किया उसका कारण उनका आत्मविश्वास था आत्मविश्वास के बल पर ही जीवन में बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती हैं।

बन्धनों का न होना ही स्वतंत्रता है। सामाजिक स्वतन्त्रता सामाजिक बन्धनों से मुक्ति है महिलाओं के लिए सामाजिक स्वतन्त्रता सामाजिक रूढ़ियों

परम्पराओ से स्वतन्त्रता है रूढ़िवादी परम्पराओ के कारण महिला प्रगति नहीं कर पाती। कई सम्भ्रान्त परिवार भी बालिका को बालक के समान शिक्षा देने में भेदभाव करते हैं। आजादी के पश्चात भारतीय संविधान में महिलाओ को शिक्षा व समानता का मौलिक अधिकार तो दिया है पर सामाजिक रूढ़ियो के कारण जो स्वतन्त्रता या लाभ उन्हे मिलना चाहिए वह उन्हे नही मिल पा रहा है घर की चार दीवारी में रहते हुये उनके आत्मविश्वास में कमी आई हैं। कम आत्मविश्वास के कारण महिलाये अपने गुणो, शक्तियों व क्षमताआ को नहीं पहचान पा रही हैं।

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से लेकर पूर्व वैदिक काल तक नारी की शक्ति का उपयोग सृष्टि को सुंदर बनाने में होता रहा है नारी पुरुष के समान जीवन के सभी क्षेत्रों मे अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का इस्तेमाल करती थी।

उत्तर वैदिक काल नारी शक्ति के अपहाय का काल रहा है पुरुष की बढ़ती अहम्मन्यता ने नारी को दोयन दर्जे का नागरिक मान लिया उसे अपने अधिकार क्षेत्र की सीमाओं में सुरक्षित रखने को भी नीति के अंतर्गत समाहित कर लिया मध्यकालीन सामंतवाद ने नारी को योग्य बनाकर उसकी शक्तियों को कीलित कर दिया।

पिछली पूरी शताब्दी नारी शक्ति का पुनर्जागरण का काल रही हैं। भारत में उन्नीसवीं शताब्दी में नारी शक्ति के जागरण के लिए संविधान के जरिए एवं स्वतंत्र संगठनों के माध्यम से अनेक प्रयास किए गए। आज विश्व स्तर पर जीवन के सभी क्षेत्रो में नारी शक्ति उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। विज्ञान, उद्योग, व्यवसाय, शिक्षा, कृषि, चिकित्सा, रक्षा, क्रीडा कला संस्कृति

आदि क्षेत्रों में महिलाएँ अपना सफलतम प्रदर्शन कर रही हैं। अनेक नारियों ने तो इन क्षेत्रो में पुरुष से आगे बढ़कर सफलता के प्रतिमान स्थापित किए है आज भी दुनिया के एक बहुत बड़े हिस्से के देहाती इलाको में नारी की श्रम–शक्ति कृषि और घरेलू उत्पादों में पुरूष से अधिक उपार्जित कर रही हैं।

अपनी शक्ति के चहुँमुखी विकास के लिए स्वयं नारी भी सक्रिय है और पुरुष भी इस दिशा में प्रयत्नशील है। इन सबके बावजूद जारी शक्ति का जैसा उपयोग होना चाहिए था वैसा नहीं हो पाया है। आज हमारे देश में नारी देह–दोहन प्रकरण में बेहताशा वृद्धि हो रही है। अनेक युवतियाँ दहेज के दानव की बलि चढ़ रही हैं। आज भी गाँव–देहातो में नारी को चारदीवारी में बंद किया जा रहा है आज नारी को संरक्षण या आरक्षण की जरूरत नहीं है वह अपने भीतर से नारी होने की कुंठा का त्योग कर स्वयं में आत्मविश्वास जाग्रत करे – इतना ही काफी है।

जिस देश में नारियों की पूजा सम्मान होता हैं, वहाँ देवता निवास करते है जिस समाज, देश और प्रदेश में नारी की जितनी प्रतिष्ठा होगी वह राष्ट्र उतना ही समृद्धिशाली होगा। जहाँ एक ओर भारतीय नारियाँ त्याग, बलिदान, वीरता, सेवा–भाव एवं भक्ति का मानव को चेतना तथा जागरण का संदेश देती रही है वही दूसरी ओर नारियों ने भक्ति की पराकाष्ठा से लेकर त्याग, तप, वीरता, आन–बान–शान की गौरव गाथा से सम्पूर्ण देश का मस्तिष्क सदैव ऊँचा किया है। देश के विकास एवं प्रगति में नारी का योगदान सदियों से चला आ रहा है। देश के विकास के लिए महिला शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की सार्थकता तभी होगी जब महिला सामाजिक रूप से स्वतन्त्र होगी महिलाओं में चेतना जाग्रत होगी। विभिन्न संस्कृतियों लोकाचारो, धर्मों, अर्थव्यवस्थाओं, पर्यावरणों, प्रशासन तंत्रों परम्पराओ एवं बच्चो के लालन–पाल में महिलाओं की उचित भागीदारी आवश्यक हैं। समाज में शांति और सुरक्षा के साथ नारी ही परिवर्तन को अंजाम दे सकती है हर प्रकार के कार्य क्षेत्र में महिलायें पुरुषों के सामन क्षमताये प्रदर्शित कर सकती हैं। इसके लिए नारी सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर आत्मविश्वास के आधार पर आगे आएं।

(2) सम्बन्धित साहित्य :–

(1) **सचदेवा (2000)** ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि घरेलू महिलाओं का बेकार बैठे रहना सामाजिक रूप से अवांछित माना जाता है ऐसी महिलायें जिन्हे उनके कार्य के लिए पारिश्रमिक प्राप्त होता है उनमे आत्मविश्वास बढ़ा है।

(2) **ढौंडियाल (2004)** ने सतत् शिक्षा कार्यक्रम में साक्षर हो रही महिलाओं का अध्ययन किया तथा अध्ययन से ज्ञात हुआ कि साक्षरता महिलाओं में निरक्षर महिला की तुलना में आत्मविश्वास अधिक है।

(3) **सिंह (2005)** ने पंचायती राज व्यवस्था लागू होने से ग्रामीण महिलाओं के आत्मविश्वास का अध्ययन कर बताया कि पंचायती राज व्यवस्था से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है।

(4) **कुमार (2006)** के अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा से ही महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाया जा सकता है। शिक्षित महिलाओं में आत्मनिर्भरता आत्मसम्मान व आत्मविश्वास बढ़ता है।

(5) **स्मृतिकण मित्र घोष (2016),** "Social freedom among the women" राँची की महिलाओं में सामाजिक स्वतन्त्रता का अध्ययन उनके शैक्षिक, कामकाजी–गैर कामकाजी तथा वैवाहिक स्तर के आधार पर किया अध्ययन में पाया गया कि उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएँ व कामकाजी महिलाएँ निम्न शैक्षिक स्तर व गैर–कामकाजी महिलाओं की तुलना में सामाजिक रूप से अधिक स्वतन्त्र है।

(6) **सिंह नरेन्द्र कुमार,** "Social freedom of Female Teachers" के अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण व शहरी महिला शिक्षको में सामाजिक स्वतन्त्रता समान है तथा कला व विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षक भी सामाजिक रूप से समान स्वतन्त्र है।

(7) **शर्मा स्मिता (2016),** "The Social freedom among the living in Kanrup district of Assam" विषय पर शोध किया। महिलाओं के क्षेत्र, शैक्षिक स्थिति, वैवाहिक स्थिति व कामकाजी व गैर कामकाजी आधार पर महिलाओं में सामाजिक स्वतन्त्रता का अध्ययन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण व शहरी, विवाहित व अविवाहित महिलाओ, शिक्षित व अशिक्षित तथा कामकाजी व गैर कामकाजी महिलाओ की सामाजिक स्वतन्त्रता में अन्तर है जबकि एकल व संयुक्त परिवार की महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में अन्तर नही है।

(8) **प्रीति,** "An impact of social freedom of woman primary School Teachers in Relation to their leadership Behaviour" अध्ययन में पाया गया कि विवाहित व अविवाहित प्राथमिक स्तर की महिला शिक्षिकाएँ सामाजिक रूप से समान स्वतन्त्र है जबकि शहरी महिला शिक्षिकाएँ, ग्रामीण महिला शिक्षिकाओ की तुलना में अधिक सामाजिक स्वतन्त्र है। सामाजिक स्वतन्त्रता व नेतृत्व क्षमता में सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

(9) **कौर नवनीत, कौर नवलीन (2015),** "Social freedem Among Adolescent Girl student of Chandigarh" अध्ययन में पाया गया कि पंजाब विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक स्वतन्त्रता अधिक है जबकि पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बन्धित महाविद्यालय की छात्राओं में कम सामाजिक स्वतन्त्रता है।

(10) **बाला रजनी (2016),** Study of Social freedom of Female Prospective Teachers in Relation to Local, Marital Status and Socio-Economic status" अध्ययन में बताया गया है कि वैवाहिक स्थिति के आधार भावी शिक्षिकाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में कोई अन्तर नहीं है। जबकि ग्रामीण की तुलना में शहरी भावी शिक्षिकाएँ अधिक सामाजिक स्वतन्त्र है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की भावी शिक्षिकाएँ अधिक सामाजिक स्वतन्त्र है।

(11) **त्रिपाठी (2007),** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि आर्थिक और शैक्षणिक दोनो रूपों से मजबूत महिलाओं में आत्मविश्वास स्तर बढ़ा है।

(12) **थैमई एवं देवी (2013),** ने इम्फाल एवं मणिपुर में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया अध्ययन से ज्ञात हुआ जो महिलायें स्वयं सहायता समूह जैसे कार्यक्रमों से जुड़ी हुई है उनमे आत्मविश्वास स्तर अधिक है।

(13) **हालाकट्टी, कामांरेड्डी एवं हिरेमथ (2011)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि अधिकतर परिवारों के पुरुष भी मानते है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पर महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

(14) **भाई एवं विजयलक्ष्मी (2011)** ने दक्षिण भारत के राज्यों में स्वयं सहायता समूह प्रोग्राम का महिला सशक्तिकरण के ऊपर प्रभाव का अध्ययन किया स्वयं सहायता समूह प्रोग्राम से महिलाओं मे आत्मविश्वास का स्तर बढ़ा है।

(15) **कौर (2017)** ने अपने अध्ययन मे बताया कि सामाजिक स्वतन्त्रता व आधुनिकरण में धनात्मक सम्बन्ध है। आधुनिकरण सामाजिक स्वतन्त्रता को बढ़ाता है।

(3) शोध समस्या की आवश्यकता एवं महत्व :–

सशक्त नारी ही सशक्त समाज की स्थापना कर सकती है। इसके लिए आवश्यकता है महिला की सशक्त बनाया जाये। आज भी प्रतिदिन समाचार पत्रों में लूट–चौरी, डकैती, बलात्कार, अत्याचार, दहेज उत्पीडन, कन्या भ्रूण हत्या जैसे कुकृत्य देखने को मिल रहे है। आज भी लोग पुरुष प्रधान समाज मानकर महिलाओं को सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान नही कर रहे है। महिला शिक्षित होते हुए भी अपने निर्णयों के लिए अपने पिता, भाई या पति पर निर्भर है। एक पढ़ी–लिखी नारी भी अपना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र नही है। महिला अपने बच्चों के लिए निर्णय नही ले पाती है। महिला शिक्षा–व्यापार, नौकरी, जीवन–यापन से सम्बन्धित निर्णय के लिए पुरुषों पर निर्भर है। सशक्त समाज के लिए

आवश्यक है कि नारी को सशक्त बनाया जाये। इसके लिए उन्हे सामाजिक बन्धनों से स्वतन्त्रता प्रदान करनी होगी उसमें सकारात्मक सोच विकसित करनी होगी। महिलाओं में नीडरता, स्वालम्बन और आत्मविश्वास जागृत करना होगा। नारियों को अपनी योग्यता, रूचि, क्षमता, शक्तियों पर भरोसा करना होगा। सामाजिक रूढ़ियो से स्वतंत्र होना होगा। आज हमारे देश में अनेकों समस्याएँ है। इन समस्याओं का समाधान महिलाओं में आत्म–विश्वास जाग्रत कर व सामाजिक स्वतन्त्रता द्वारा ही सम्भव है। अतः शोधकर्त्री ने इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखकर समस्या का चयन किया है। आज भी दुनिया के बहंत बड़े हिस्से के देहाती इलाकों में नारी की श्रम–शक्ति कृषि और घरेलू उत्पादनों में पुरुष से अधिक उपार्जिक कर रही है।

(4) समस्या कथन :–

"महिला विश्वविद्यालयों एवं सह–शैक्षिक विश्वविद्यालयों में महिलाओं के आत्मविश्वास एवं सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन।"

(5) शोध के उद्देश्य :–

1. महिला विश्वविद्यालय एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों की महिलाओं में आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. महिला विश्वविद्यालय एवं सह शैक्षिक विद्यालयों की महिलाओं में सामाजिक स्वतंत्रता का अध्ययन करना।

(6) शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों की महिलाओं के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
2. महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों की महिलाओं के सामाजिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(7) चर :–

जिस गुण, विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना हमारा उद्देश्य है, उसे हम चर कहते है। प्रस्तुत शोध के चर निम्न हैः–

- आत्मविश्वास
- सामाजिक स्वतन्त्रता

(8) शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

अनुसंधान में परिकल्पना के परीक्षण के लिए आंकड़ो का संग्रह उपकरणों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने दो उपकरणो का प्रयोग किया है। आत्मविश्वास के लिए डॉ० रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास सूची तथा सामाजिक स्वतन्त्रता के लिए एल.आई.भूषण द्वारा निर्मित महिला सामाजिक स्वतन्त्रता मापनी का प्रयोग किया है।

(9) शोध विधि :–

एक निश्चित अवस्था के अनुसार अध्ययन करने की पद्धति शोध विधि है। शोध विधि वह मार्ग है जिस पर चलकर शोध कार्य पूर्ण होता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने "सर्वेक्षण विधि" का प्रयोग किया है। सर्वेक्षण विधि वर्तमान से सम्बन्धित है जो अनुसंधान के अन्तर्गत घटना एवं तथ्य की स्थिति को निर्धारित करती है।

(10) न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्यन में विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत 600 महिलाओं की जनसंख्या ली गई। जिसमें न्यादर्श के लिए 300 महिला विश्वविद्यालय में अध्ययनरत महिला तथा 300 सह–शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत महिलाएँ है।

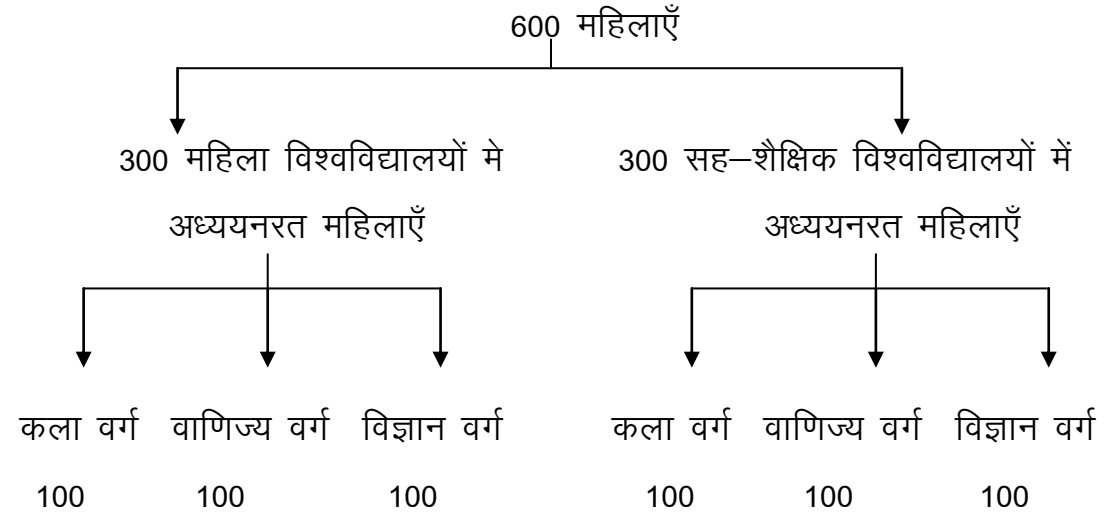

(11) शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

अनुसंधान की प्रक्रिया में आंकड़ो के विश्लेषण तथा निष्कर्ष निकालने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

- माध्य
- प्रमाप विचलन
- 'टी' अनुपात

(12) शोध में प्रयुक्त शब्दावली :–

- **महिला विश्वविद्यालयः–**

  उच्च स्तर पर शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षण संस्थाआं को विश्वविद्यालय के नाम से पुकारा जाता है। विश्वविद्यालय के अधीन अनेक महाविद्यालय आते है। महिला विश्वविद्यालयों में केवल स्त्रीयों को ही उच्च स्तर शिक्षा प्रदान की जाती है।

- **सह–शैक्षिक विश्वविद्यालयः–**

  लड़के व लड़कियों को एक साथ उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान करने वाली शिक्षण संस्थाओं को सह–शैक्षिक विश्वविद्यालय कहते है।

- **आत्मविश्वासः–**

आत्मविश्वास का अर्थ है अपनी शक्ति व योग्यताओं पर विश्वास करना। स्वयं पर विश्वास करना। आत्मविश्वास एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। इससे महान कार्यो में सफलता प्राप्त होती है।

- **सामाजिक स्वतन्त्रताः–**

सामाजिक स्वतन्त्रता का अर्थ है महिलाओं का उन सभी सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति जो महिलाओं को निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर प्रदान करती है। महिलाओं की खुद से सम्बन्धित निर्णय लेने की क्षमता, जातिगत बन्धनों से मुक्ति, जीवन साथी चुनने की स्वतन्त्रता ही सामाजिक स्वतन्त्रता है। महिलाओं मे सामाजिक स्वतन्त्रता उन सभी सामाजिक वर्जनाओ व बन्धनों से मुक्ति है जो महिला को अपना विकास करने से रोकते है।

(13) शोध का परिसीमांकन :–

शोध के समय व उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा अपनी समस्या को निम्न क्षेत्र तक ही सीमित रखा जाएगा।

1. शोध में केवल विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत महिलाओं को ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
3. शोध में केवल 600 महिला विद्यार्थी को ही लिया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकी में माध्य, प्रमाप विचलन व टी अनुपात का प्रयोग किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० प्रेमचन्द्र गोस्वामी (2006) "नारी शक्ति से समाज परिवर्तन" महेश बुक डिपो, जयपुर
2. डॉ० भंवरलाल नागदा (2007) "शिक्षा के नूतन आयाम" अकुँर प्रकाशन, उदयपुर (राज.)
3. नई शिक्षा 30 दिसम्बर 2015 "महिला सशक्तिकरण का भविष्य" मनोज माथुर, जयपुर
4. श्याम सुन्दर दुबे (2007) "समसामयिक निबंध" "उभरती हुई नारी शक्ति और हमारा समाज" विधा विहार नई दिल्ली
5. संगीता शर्मा, राजेश कुमार शर्मा (2005) "महिला विकास एवं राजकीय योजनाएँ" रितु पब्लिकेशन्स, जयपुर
6. पारसनाथ राय, सी. पी. राय (2014–15) "अनुसन्धान परिचय" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
7. डॉ० गया सिंह, डॉ० अनिल कुमार राय, "शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ" आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
8. आर.ए.शर्मा (2006), "शिक्षा अनुसंधान" सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
9. डॉ० हरेन्द्र सिंह (2014), "अनुसन्धानः एक लघु शोध प्रबन्ध का अध्ययन" आर लाल बुक डिपो मेरठ
10. डॉ० एस. एम. व्यास (2007), "भारतीय शिक्षा, नई दिशाये, नये आयाम" क्लासिक कलैक्शन जयपुर
11. अरबिन्द सिन्हा (2006) "आपका व्यक्तित्व आपकी सफलता" जयपुर पब्लिशिंग हाउस
12. International Journal of Advanced Education and Research Volume Issue 8, Aug 2016
13. www.techgurukagyon. com.
14. http://mhindiwebdunia.com
15. International Journal of Applied Research 2016, 2(5) 2016-219